हरिवंश राय बच्चन जी के सत्यांकित इतिहास के प्रच्छन्न अनुभवों का विश्लेषण: आत्मकथा के विशेष सन्दर्भ में

Key Words: **आत्मकथा, बच्चन साहित्य, प्रच्छन्न अनुभव, सत्यांकित इतिहास।**

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

साहित्य में जीवन के विविध आयामों को रूपायित किया जाता है और साहित्य की विधा आत्मकथा में इस बहुआयामी जीवन को। आत्मकथा का नायक प्रामाणिक जीवित व्यक्ति होता है, वह उन ज़मीनी सच्चाइयों का विश्लेषण करता है जिससे व्यक्तिगत जीवन के पहलू स्वत: खुलते चले जाते हैं। पति-पत्नी के पारस्परिक आकर्षण को पारिवारिक ढांचे के रूप में मर्यादित किया जाता है। हरिवंशराय बच्चन जी ने भाव जगत की इच्छाओं, आकांक्षाओं का विश्लेषण करते हुए जीवन के प्रच्छन्न अनुभवों को प्रस्तुत किया हैं। भाव-प्रवण व्यक्तित्व बच्चन जी ने जीवन के सत्यांकित इतिहास को रूपायित किया है।

डॉ. किरण ग्रोवर
एसो. प्रो. स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
डी. ए-वी. कॉलेज,
अबोहर।

साहित्य और जीवन का अटूट सम्बन्ध है। साहित्य में जीवन के विविध आयामों को और आत्मकथा में बहुआयामी जीवन को रूपायित किया जाता है। आत्मकथा एक अन्तर्मुखी विधा है, अपने मन के द्वन्द्वों, अनुभवों, भावनाओं, संवेदनाओं के सम्प्रेषण के लिए स्रष्टा आत्मकथा का सृजन करता है। आत्मकथा स्वयं व्यक्ति के द्वारा अपनी ही जीवनगाथा की वह प्रस्तुति है, जो पूर्णतया निष्कपटतापूर्ण, गुण-दोषों पर प्रकाश डालते हुए बिना किसी कल्पना के कलात्मक ढंग से लिखी जाती है।[1] आत्मकथा की घटनाएँ सत्य व तथ्य की कसौटी पर पूरी होनी चाहिए, चाहे वह सत्य व्यक्ति सत्य ही क्यों न हो। वर्ण्य-विषय में ऐसी रोचकता होनी चाहिए कि पाठक हर क्षण अगले कार्य-कलाप को जानने के लिए उत्सुक रहे। वर्ण्य-विषय में स्वाभाविकता और रोचकता के मध्य समन्वय करना ही आत्मकथाकार का परीक्षण है। आत्मकथा लेखक के जीवन की दुर्बलताओं, सबलताओं का वह सन्तुलित और व्यवस्थित चित्रण है, जो उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निष्पक्ष उद्घाटन में समर्थ होता है।[2]

आत्मकथाकार बहिर्मुख होने की अपेक्षा अर्न्तमुख होकर ही आत्मकथा लेखन की ओर प्रवृत्त होता है। आत्मकथा का उद्देश्य बाह्योन्मुख होने की अपेक्षा अन्तर्मुख होता है जिस में आत्मनिरीक्षण, आत्मपरीक्षण, आत्मविश्लेषण की प्रधानता रहती है। इस प्रक्रिया में वह अपने स्वजनों, परिजनों एवं इष्ट मित्रें तक से अलग होता हुआ आत्मकथा लिखता है जिसमें अपनी कथा कहने के साथ साथ अपनों की कथा कहने का अधिकार सहज ही प्राप्त कर लेता है। यही वह धुर्व है जहाँ वह वैयक्तिकता से सामाजिकता की ओर उन्मुख होता है एवं आत्म के दायरे में अपने माता पिता, भाई बहिन, जीवन साथी, सन्तान, सगे सम्बन्धी आत्म में निविष्ट हो जाते हैं।[3] अत: इस आत्मीय सम्बन्धों के बीच विचरता आत्मकथाकार एक ओर स्नेह भाजन बनकर एकाकीपन के भार से मुक्त होने लगता है तथा दूसरी ओर परिवार जनों के आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, धर्मिक दायित्वों का निर्वाह करता हुआ अपने आप को सम्पूर्ण मानने लगता है। अत: आत्मकथाकारों के जीवन का विशेष अध्ययन कथानायक के जीवन की सफलता का दिग्दर्शन करवाता है तथा वही, पाठकीय जिज्ञासा का भी शमन करता है। वर्तमान बोध और अतीत बोध परस्पर जब अनुकूल बन जाते हैं और लेखक अतीत बोध के मध्य वर्तमान बोध को उभारने में संलग्न हो जाता है, तब वहाँ पहुँचने पर लेखक का जीवनदर्शन स्थिर और निश्चित बनता है। इस दृष्टि से वर्तमान बोध का परिपक्व हो जाना ही आत्मकथा में नवीन अन्तर्दृष्टि का परिचायक

है।[4] वैयक्तिकता आत्मकथा का प्राण-तत्त्व होती है। कोई व्यक्ति जब आत्मकथा लिखता है तो अपने प्रतिबिम्ब को अपने ही हाथों से संवारने का प्रयत्न करता है। आत्मकथा में व्यक्ति और विषय दोनों बिम्ब-प्रतिबिम्ब रूप में विद्यमान रहते हैं।[5]

साहित्यिक आत्मकथाकार अपने अन्तर्मुखी मन को विशिष्ट स्व के साथ प्रतिच्छायित करते हैं, जिनके कारण साहित्यिक आत्मकथाओं में निजता का निर्वाह अधिक होता है।[6] आत्मकथाओं में साहित्यकारों के व्यक्तिगत जीवन के पहलू स्वत: खुलते चले जाते है। मानसिक प्रौढ़ावस्था के मोड़ पर लेखक के परिपक्व संस्कार स्मृति, सत्य व साहस से अतीत व वर्तमान के मिलन-बिन्दु पर बाहरी प्रेरणा और अभ्यर्थना का सम्बल लेकर आत्माभिव्यक्ति के लिए व्यग्र हो उठते हैं तब कलात्मक आत्मकथा का जन्म होता है।

साहित्यकारों ने अपने जीवन के रहस्यमय व प्रच्छन्न अनुभव अपनी आत्मकथा में लिखकर पाठकों के सम्मुख विश्लेषणार्थ प्रस्तुत किए हैं। साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में उन जमीनी सच्चाइयों का विश्लेषण किया है जिससे जीवन में ठहराव व गहराई संस्पर्शित होती है। साहित्यकार ने किन परिस्थितियों में साहित्य का निर्माण किया। विश्वसनीयता व यथार्थ-बोध साहित्यकारों की आत्मकथा की विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं। साहित्यकारों की आत्मकथाओं में निरूपित दाम्पत्य सम्बन्धों का विशेष अध्ययन, जहाँ उनके परिचय को समग्रता और सार्थकता प्रदान करता है और पाठकीय जिज्ञासा हेतु पूर्ण सन्तुष्टिप्रद है वहाँ साहित्य के इतिहास के अध्ययन में भी नवीन दिशाओं की गवेषणा करने वाला है। दाम्पत्य जीवन में विवाह एक आधारशिला है। आत्मकथाकारों ने पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण में किस प्रकार जीवन-निर्वाह किया है। साहित्यकारों की आत्मकथाएँ तथ्याश्रिता के आधार पर अपना पृथक् रूपभेद निर्मित करती हुई पाठक के अन्त:करण पर विशेष छाप छोड़ती हैं। साहित्यकारों की आत्मकथाओं में सौन्दर्य, आशा-निराशा, पीड़ा-चाह, भय ग्रन्थि, सुख-दु:ख के विविध छाया तथ्यों की ही बाह्य सौन्दर्यमयी कलात्मक अभिव्यक्ति की गई है।

गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों का द्वार है। विधि द्वारा विवाह के उपरान्त ही स्त्री और पुरुष को पति-पत्नी का दर्जा दिया जाता है और पति-पत्नी को दम्पति माना गया है। दाम्पत्य जीवन में विवाह एक आधारशिला है। विवाह के माध्यम से पति-पत्नी गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट होते हैं। अपनी यौन इच्छाओं की पूर्ति, सन्तानोत्पत्ति एवं बच्चों का पालन पोषण करते हैं। पति-पत्नी के पारस्परिक आकर्षण को मर्यादित करने का उपक्रम पारिवारिक ढांचे की आधारशिला के रूप में दाम्पत्य सम्बन्धें में विद्यमान रहता है।[7]

हरिवंश राय बच्चन हिन्दी साहित्य के नक्षत्र के रूप में जाज्वल्यमान हैं जिनमें विशाल जीवन अनुभव, वैश्विक दृष्टिकोण, ज्ञानी मनुष्य का व्यक्तित्व विद्यमान है। विश्वविख्यात साहित्यकार के रूप में बच्चन जी ने अपने जीवन अनुभवों को आत्मकथा के चार भागों के रूप में विस्तारित किया है। भोगे हुए जीवन की अनुभूतिपरक तीव्रता, आत्मोद्‌गारों की वाणी, चेतन अवचेतन के संस्कार, अनुभव से संचित स्मृतियाँ, भूत व भविष्य की निराशा, वेदना, संवेदना, हर्ष, विमर्ष, संघर्ष, व्यामोह, विद्रोह, विवेचन का सत्य आत्मकथा के माध्यम से विवेचित है, वही, बच्चन जी का जीवनवाद है।

निश्चय ही हिन्दी आत्मकथा के इतिहास में बच्चन जी ने लोकप्रियता अर्जित की है। भावनाओं के साधर्म्य में काव्य-प्रेमियों को बच्चन जी के लिए पहले ही सहज आकर्षण था। उनके व्यक्तिगत जीवन की उथल-पुथल, संघर्ष, विशिष्ट जीवन-अनुभवों में पाठक का औत्सुक्य विचारणीय बन पड़ा है। बच्चन जी के जीवन अनुभवों को जान लेने की पाठकों को उत्सुकता रही, जिस की प्रत्यक्ष अनुभूति में बच्चन जी ने व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों, विविध आकर्षण, मानसिक संघर्ष को लेखनीबद्ध किया है। बच्चन जी ने अपने जीवन का तूफान, तूफान का सैलाब, भावनाओं की सघनता, तनावों का कसाव आदि को वाणी देने का सातत्य प्रयास किया। बच्चन जी ने आत्मकथा लेखन में नये कीर्तिमान स्थापित किए हैं। अपने भाव जगत की इच्छाओं, आकांक्षाओं, स्वप्नों, कल्पनाओं का सुन्दर दिग्दर्शन किया एवं व्यष्टि-समष्टि के, व्यक्ति-व्यक्ति के सम्बन्धों का विष्लेषण बच्चन जी ने भी किया। पूर्वजों का इतिहास रेखांकित करते हुए पति-पत्नी के आदर्श-सम्बन्ध, परिवार प्रथा, सैक्स, गर्भाधान आदि विषयों को प्रस्तुत करके बच्चन जी ने आत्मकथा की मूल्यवत्ता में योगदान दिया है।

बच्चन जी ने जब उद्‌दाम आकर्षणों को अनुभव किया तब उन्होंने सैलाब में बहना चाहा। इन आकर्षणों ने उन्हें अपेक्षित साहस, आत्मस्वीकृति प्रदान की। व्यावहारिक जगत की अतृप्त इच्छाओं व कुण्ठाओं को अनुभूति के स्तर पर अभिव्यक्त किया। श्यामा से विवाह होने के उपरान्त श्यामा दो वर्ष तक अपनी माँ की सेवा शुश्रूषा में संलग्न रही। जब श्यामा की विदा की तिथि निश्चित हुई तब बच्चन जी को अप्रत्याशित प्रसन्नता हुई जिसकी स्वीकारोक्ति की है-"दो वर्ष सास की बीमारी में से जैसे मैंने श्यामा से कोर्टशिप की हो..... और असली विवाह मेरा अब होने जा रहा हो..... अब वह परिपक्व हो गई है। एक-दूसरे को प्यार करेंगे..... दो मिलकर एक ही होंगे।"[8]

यौवनावस्था में स्त्री के प्रति सहज आकर्षण स्वाभाविक होता है। इस आकर्षण के कारणों का मनोवैज्ञानिक आधार होता

है जिसमें अन्तर्निहित पुरुष या स्त्री प्रभावित होते हैं। बच्चन जी की पत्नी श्यामा ने अपनी त्यागतत्परता, उदारता, समझदारी से पति का दिल विजित कर लिया। पति के बीमार होने पर श्यामा जी ने अपनी असाध्य बीमारी को भुला कर बीमार पति की सेवा शुश्रूषा की जिससे उनमें आन्तरिक लगाव उत्पन्न हो गया। श्यामा की बीमारी ने बच्चन जी की उद्दाम भावनाओं को दमित कर दिया, जिसकी बच्चन जी ने शब्दबद्ध अभिव्यक्ति की है- "श्यामा ने अपने बिस्तर से हाथ बढ़ा कर मेरा हाथ पकड़ लिया था हमारी खाटें मिली रहती थी.....उसके दुर्बल शरीर स्पर्श से मैं जाग गया था मुझे जगाने का उसका यही तरीका था।"[9]

बच्चन जी के सपनों पर आसमान के सितारे व्यंग्य से मुस्करा रहे थे। विवाह के तीन वर्ष पश्चात् जब गौना होना था, उस दिन भी श्यामा का बुखार न टूटा-"रात को मैंने देखा कि श्यामा की चारपाई मेरे कमरे में न लगवाकर दूसरे कमरे में लगवाई जा रही है।.....मैं श्यामा से बहुत कुछ कहना चाहता था।..... चारपाई से चारपाई मिला ली और ऐसा अनुभव हुआ जैसे हमारे शरीर ही एक-दूसरे से मिल गए हों।.....

न तुम सो रही हो, न मैं सो रहा हूँ
मगर यामिनी बीच में ढल रही है।"[10]

बच्चन जी ने श्यामा की अन्तिम अवस्था को मृत्यु की अखण्ड रात कहकर अपनी संवेदना प्रकट की उस पार की शब्दावली में श्यामा के अनन्त निद्रा में विलीन होने के उपरान्त बच्चन जी ने प्रथम मिलन से लेकर अन्तिम मिलन को अवाक् अनुभूत किया। पत्नी के प्रति उत्तरदायित्व, समर्पण की भावना को बच्चन जी ने सविस्तार अभिव्यंजित किया है- "श्यामा की खाट से खाट मिलाकर मैं 216 दिन सोया हूँ उसकी कै, थूक की चिलमची साफ की है, उसका मलमूत्र उठाया है, उसे नहलाया धुलाया है..... अब उसी को मरना है।"[11]

स्वस्थ पति-पत्नी के बीच शारीरिक सम्बन्ध स्वाभाविक, आवश्यक व अनिवार्य स्वीकारे गये हैं, श्यामा प्रतिवर्ष गर्मी आते-आते ज्वरग्रस्त हो जाती है। श्यामा के लिए बच्चन जी पारदर्शी दर्पण के समान प्रतिबिम्बित होते- "15 अप्रैल 1936 ठीक इसी दिन वह चारपाई से गिरी और फिर न उठ पाई। उसी दिन से रोग शय्या पर पड़े रहने के बाद 17 नवम्बर 1936 को उसने अपना शरीर छोड़ दिया।"[12]

प्रथम विवाह के उपरान्त बच्चन जी ने वैवाहिक जीवन की आशाओं के जो सपने देखे, उनमें पत्नी के रूप में अबोध बालिका को देखा, पत्नी के बीमार होने पर भी विरोधी परिस्थितियों में अपने अहं को दबाया। अपनी आत्मकथा में श्यामा के साथ आन्तरिक लगाव को बड़ी सहजता के साथ स्वीकार किया। बच्चन जी ने जीवन के विविध मोड़ों पर संघर्ष किया और इसीलिए सुख के नीड़ की एकरसता-संघर्षरहित उनके मन को बेचैन करती रही। बच्चन जी ने श्यामा की अपने प्रति भावधारा को इस प्रकार सम्प्रेषित किया है- "इतना सहयोग दिया, इतनी अपनी सेवा दी, इतना अपने को दिया, इतना अपनी ओर से मुझे चिन्ता विमुक्त रखा कि मैं उस संघर्ष में विजयी हुआ।..... श्यामा बिल्कुल शाब्दिक अर्थों में मेरी अर्द्धांगिनी थी"[13]

श्यामा की मृत्यु से बच्चन जी के सपने बिखर गये परन्तु तेजी से विवाह, व्यावसायिक उन्नति व आर्थिक समाधान ने उनके उजड़े नीड़ को बसा दिया। बीच में पन्त जी ने बच्चन जी का हाथ देखकर विचित्र भविष्यवाणी की कि तुम्हारा विवाह इस वर्ष की समाप्ति पर सम्पन्न होगा। तेजी जी जब बच्चन जी की जीवन संगिनी बनने का निर्णय कर चुकी थी, उस समय मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बच्चन जी ने तेजी में अन्तर्निहित पुरुष-प्रधानता को संकेतित किया था। तेजी जी को जीवन में संगिनी बनाने की परिकल्पना को बच्चन जी ने शब्दबद्ध किया है- "एक जनवरी 1942 की रात को याद करता हूँ तो पाता जब तेजी मेरे जीवन में आई। वह पहली नारी थी जिनमें देवी की दिव्यता, माँ की ममता, सहचरी की सद्भावना, प्राणाधार की प्राणदायिनी धारा का मैंने एक साथ अनुभव किया। विवाह के उपरान्त बच्चन जी ने समर्पण भाव का स्पष्ट प्रत्यंकन किया है-''तेजी ने मेरी ओर देखा और शरारत भरी मुस्कान दी। जैसे हम दोनों ने एक दूसरे से कहा, हम पति-पत्नी से कुछ अधिक एक-दूसरे के लिए हो चुके हैं।"[14]

विवाहोपरान्त दिन जाड़ों का पलक दबाते ही बीत गया। रात्रि भोज में आमंत्रित सहयोगियों ने शुभाशीष प्रदान कर बच्चन व तेजी जी को कृतार्थ किया। पति-पत्नी की मिलनावस्था का बच्चन जी ने प्रभावशाली निरूपण किया है-"प्रेमियों की हर रात सुहाग रात होती है। असली सुहाग रात तो पहली जनवरी उन्नीस सौ बयालीस को बरेली में ही हो गई थी मन के मिलने की''[15]

बच्चन जी की आत्माभिव्यक्ति के सन्दर्भ में डॉ॰ शिवमंगल सुमन जी का कथन अवलोकनीय है-"ऐसी अभिव्यक्तियाँ नई पीढ़ी के लिए पाथेय बन सकेंगी, इसी में उनकी सार्थकता भी है।''[16]

नरेन्द्र शर्मा जी ने लिखा है- यह आत्मकथा बच्चन के मानस भवन का कलश है। भवन की नींव 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' है, दीवारें 'नीड़ का निर्माण फिर' है और छत 'प्रवास की डायरी यह बच्चन के आत्मकथात्मक साहित्य की परिणति है।[17]

बच्चन जी ने तेजी बच्चन जी से दूसरी पत्नी के रूप में जब सान्निध्य पाया, तेजी के पर्दापण से बच्चन जी की असफलताएँ प्रक्षालित हुईं, तेजी से सम्पर्क होने पर सुख की निधियाँ संचित कर ली। बच्चन जी ने भोगे हुए जीवन की परतों को ईमानदारी से खोला। बच्चन जी ने प्रेयसीत्व, पत्नीत्व, मातृत्व

भाव धारा का विस्तारण करके पारिवारिक भावनात्मकता की आकर्षणमयी व्यंजना की है। नारी की प्राथमिकता, अद्वितीयता का बिम्बन करते हुए बच्चन जी ने पहली सन्तान 'लड़की' की आकांक्षा मन में समेटे पुत्र जन्म का आख्यान प्रस्तुत किया है- "तेजी के प्रसविनी बनने का समय आ पहुँचा, अपराह्न में दिन भर की कठिन पीर के पश्चात् तेजी ने पुत्र को जन्म दिया।[18] "अपने 36 वर्ष की अवस्था मे पहली बार मैंने व्यवस्थित वैवाहिक जीवन का सुख जाना था।"[19]

परिवार में काम के धर्मसम्मत रूप की प्रतिष्ठा करके जीवन में सरसता का संचार होता है। काम की शक्ति का उचित सेवन पति-पत्नी का अनिवार्य कर्त्तव्य है। परिवारों में वंशवर्द्धन व जातीय जीवन के सातत्य को बनाए रखने की अनिवार्यता पर बल दिया जाता है। बच्चन जी ने लैंगिक भावना की तृप्ति हेतु अपनी उदात्तीकृत अवस्था का प्रतिपादन किया है- "यौन और लैंगिक भावना की तृप्ति के लिए सहज स्वाभाविक स्थिति की खोज में जो संघर्ष करना पड़ा। उसमें इन दोनों का सबलिमेषन उदात्तीकरण हो गया.....अदृश्य ने तेजी में मेरी वह कामना पूरी कर दी।"[20]

पति-पत्नी द्वारा जीवनपर्यन्त एक दूसरे के सुख-दुख में बने रहने की प्रतिबद्धता ही विवाह संस्कार का पवित्र भाव है। दाम्पत्य जीवन की सफलता के लिए पति-पत्नी एक दूसरे की भावनाओं से साधरणीकृत हों। बच्चन जी ने 'नीड़ का निर्माण फिर' आत्मकथा के अर्न्तगत पत्नी के सहयोग, सद्भावना व प्रेम का बिम्बात्मक स्वरूप निरूपित किया है-''मैंने बांई तरफ के बैडरूम को अपना स्टडी रूम बनाया, 58 की रायल्टी में जो राशि मुझे मिली उससे तेजी ने सबसे पहले मेरी स्टडी के लिए व्हाइट वुड की एक कुर्सी मेज खरीदी।"[21]

दाम्पत्य जीवन में सहानुभूति, प्रेम, विश्वास समानधर्मिता आदि भावनाएँ जीवन में सरसता का संचार करती हैं। पारिवारिक भावना की व्यापकता सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए अनिवार्य स्तम्भ है। पति-पत्नी नैतिक, सामाजिक परम्पराओं व आदर्शों का निर्वहण करते हुए साहचर्य भाव, पारस्परिक हित चिन्तन करके अपने व्यक्तित्व का परिष्कार करते हैं। कृतज्ञता की अन्योन्याश्रिता के आधार पर पति-पत्नी पारस्परिक विश्वास से एक दूसरे की चेतना को जागृत रखते हैं। बच्चन जी ने जब कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से डिग्री ली, उस समय अभावग्रस्तता का दृश्य पत्नी के समक्ष रखा परन्तु पत्नी तेजी जी ने कैम्ब्रिज पहुँचने पर अपने पति की आकांक्षा को परिपूर्ण करना चाहा। बच्चन जी ने पारस्परिक विश्वास की भावना को 'दशद्वार से सोपान तक' आत्मकथा के अन्तर्गत सशक्त रूप में विश्लेषित किया है- ''तेजी ने मेरी ललक देखी तो गाउन खरीद लिया। मैंने गाउन पहना तो चेहरे पर सन्तोष की मुस्कान आ गई..... तेजी कह रही है कि नाम के अनुरूप बच्चन में कही एक बच्चा भी छिपा बैठा है।''[22]

परिवारिक जीवन की क्रमबद्धता का विस्तारण करते हुए बच्चन जी ने अन्तरंगता व पारस्परिक समन्वय का अंकन किया है- ''24 जनवरी को हमने विवाह की रजत जयन्ती मनाई जिसके उपलक्ष्य में हमने दिल्ली के 25 भारतीयों को एक भोज दिया। अमित और बंटी भी इस अवसर पर कलकत्ता से आए।"[23]

परिवारिक भावनात्मकता का सूत्र जब अगली पीढ़ी में स्थानांतरित होता है, तब सामाजिक नियन्त्रण के बल पर परिवार की आस्था सुदृढ़ हो जाती है। बच्चन जी ने अपने पुत्र की भावनाओं को भी संवलित किया है- ''11 अक्तूबर 1972 को अमित की 30वीं वर्षगाँठ थी..... हम इस शुभ दिन की स्मृति में अमित को एक सुन्दर सा उपहार देना चाहते थे।[24]

बच्चन जी ने अपने जीवन में दाम्पत्य सुख की परिकल्पना को 'दशद्वार से सोपान तक' आत्मकथा के आभार प्रदर्शन के अन्तर्गत प्रतिबिम्बित किया है- ''इसके बाद अमिताभ की माँ के प्रति जो इस यज्ञ की प्रमुख प्रेरणा रही है जो सम्पूर्ण यज्ञ काल में मेरे बाएं बैठी भी मेरे दाहिने रही है..... 1980-आयु 77 वर्ष 7 महीने 7 दिन पर।''[25]

हरिवंश राय बच्चन हिन्दी साहित्य में नक्षत्र के रूप में जाज्वल्यमान हैं जिनमें विशाल जीवन अनुभव, वैश्विक दृष्टिकोण, ज्ञानी मनुष्य का व्यक्तित्व विद्यमान है। बच्चन जी के जीवन अनुभवों को जान लेने की पाठकों को उत्सुकता रही, जिस की प्रत्यक्ष अनुभूति बच्चन जी ने आत्मकथा में की है एवं विगत जीवन की स्मृतियों की ललक व विवशता को अभिव्यक्त करते हुए व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों, भाव जगत की इच्छाओं, आकांक्षाओं, स्वपनों, कल्पनाओं, मानसिक संघर्ष को लेखनीबद्ध किया है। पत्नीत्व, मातृत्व भाव धारा का विस्तारण करके व्यष्टि-समष्टि के, व्यक्ति-व्यक्ति के सम्बन्धों का विश्लेषण एवं पारिवारिक भावनात्मकता की आकर्षणमयी व्यंजना की है। पूर्वजों का इतिहास रेखांकित करते हुए पति-पत्नी के आदर्श-सम्बन्ध, परिवार प्रथा, सैक्स, गर्भाधान आदि विषयों को प्रस्तुत करके बच्चन जी ने आत्मकथा की मूल्यवत्ता में योगदान दिया है। 'स्व' को प्रक्षेपित बच्चन जी की आत्मकथा भावातिषयता का रूप ग्रहण करती है। बच्चन जी की आत्मकथा भाव-प्रवण व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ प्रमाणित हुई है।

सन्दर्भः-

1. गोविन्द त्रिगुणायतः शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, एस चाँद एण्ड कम्पनी, दिल्ली, 1968, पृ0 508

2. बैजनाथ सिंहलः हिन्दी विंिएं स्वरूपात्मक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1988 पृ0 186

3. नारायण विष्णु शर्माः हिन्दी आत्मकथा, पुस्तक संस्थान, कानपुर, 1978, पृ0 20

शेष पृष्ठ 72 पर

जोश में कुछ ऐसे काम किये हो, जिनसे हम सहमत न हो यह सम्भव है, किन्तु इससे उसका महत्व कम नहीं होता। देश में इस घटना की जो जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई है, उस पर पानी नहीं फेरा जा सकता। उसने दिखा दिया है कि हिन्दुस्तानी फौज और भारतीय जनता के बीच जो लोहे की दीवार खड़ी की थी, वह ढह गई है।''[16]

अत: कहा जा सकता है कि इस कविता संकलन के माध्यम से कवि ने स्वतंत्रता संघर्ष में फैले सम्प्रदायवाद का पुरजोर विरोध ही नहीं किया बल्कि इन कविताओं के माध्यम से कवि ने उनको यह भी बताया कि उन्हें किस प्रकार और किस दिशा में आगे बढ़ना है। उन्होंने इन कविताओं के अध्ययन की उपयोगिता बताते हुए कहा है कि- ''आज का भारत पहले के भारत से काफी भिन्न है, फिर भी आज देश के सामने जो समस्यायें हैं, वे पहले के सिलसिले से जुड़ी हुई हैं। उस दौर के इतिहास का अध्ययन आज के भारत के लिए शिक्षाप्रद है।''[17]

संदर्भ:-

1. विपिन ठाकुर, हिन्दी की मार्क्सवादी कविता, आगरा प्रगति प्रकाशन, भारत 1978, पृ. 124
2. नरेन्द्र पुण्डरीक, डॉ॰ शर्मा का व्यक्तित्व, राष्ट्रीय संगोष्ठी, स्मारिका 2012 हंसराज कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली-9, पृ. 65
3. चन्द्रबली सिंह, उद्भावना, डॉ. रामविलास शर्मा महाविशेषांक द्वितीय संस्करण 2012 अंक 104, पृ. 18
4. रामविलास शर्मा-सदियों के सोये जाग उठे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली 1988, पृ. 33
5. रजनी पामदत्त-इण्डिया टुडे, प्युपिल्स पब्लिशिंग हाउस बाम्बे 1949, पृ. 537
6. रामविलास शर्मा, सदियों के सोये जाग उठे, वाणी प्रकाशन दिल्ली, 1988, पृ. 9
7. वही, पृ. 18
8. वही, पृ. 17
9. प्रो. विपिन चन्द्र-भारत का स्वतंत्रता संघर्ष 1995, हिन्दी माध्यमिक कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली-9, पृ॰ 328
10. विपिन ठाकुर, हिन्दी की मार्क्सवादी कविता, आगरा प्रगति प्रकाशन भारत, 1978, 125
11. रामविलास शर्मा, सदियों के सोये जाग उठे, वाणी प्रकाशन दिल्ली, 1988, पृ॰ 20
12. वही, पृ. 20
13. प्रो. विपिन चन्द्र, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष 1995, हिन्दी माध्यमिक कार्यान्विय निदेषालय दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली-9, पृ॰ 328
14. रामविलास शर्मा, सदियों के सोये जाग उठे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली 1988, पृ. 19
15. रजनी पामदत्त, इण्डिया टुडे, प्युपिल्स पब्लिज़िंग हाउस बाम्बे 1949, पृ. 537
16. रामविलास शर्मा, सदियों के सोये जाग उठे, 1988 वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृ. 8
17. वही, पृ. 5

◆◆◆

पृष्ठ 67 का शेष

4. कमलेश सिंह: हिन्दी आत्मकथा: स्वरूप एवं साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1989, पृ0 19
5. उर्मिला भटनागर: हिन्दी उपन्यास साहित्य में दाम्पत्य चित्रण, अर्चना प्रकाशन, दिल्ली, 1981
6. विश्वबन्धु 'व्यथित': हिन्दी का आत्मकथा साहित्य, राध प्रकाशन, दिल्ली, 1989, पृ0 27
7. साधना अग्रवाल: वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995 , पृ0 13
8. हरिवंश राय बच्चन: क्या भूलूँ क्या याद करूँ, राजपाल एंड सन्श, दिल्ली, 1969,पृ0 187
9. हरिवंश राय बच्चन: नीड़ का निर्माण फिर, राजपाल एंड सन्श, दिल्ली, 1970, पृ0 14
10. हरिवंश राय बच्चन: क्या भूलूँ क्या याद करूँ, पृ0189-190
11. हरिवंश राय बच्चन: नीड़ का निर्माण फिर, पृ0 27
12. हरिवंश राय बच्चन: क्या भूलूँ क्या याद करूँ, पृ0 235
13. वही, पृ0 235
14. हरिवंश राय बच्चन: नीड़ का निर्माण फिर, पृ0 184
15. वही, पृ0 191
16. वही, पृ0 199
17. कमलेश सिंह: हिन्दी आत्मकथा: स्वरूप एवं साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1989,
18. हरिवंश राय बच्चन: नीड़ का निर्माण फिर,, पृ0 124
19. वही, पृ0 184
20. वही, पृ0 195
21. वही, पृ0 162
22. हरिवंश राय बच्चन: दशद्वार से सोपान तक, राजपाज एंड सन्श, दिल्ली, 1985, पृ0, 460
23. वही, पृ0 34
24. वही, पृ0 323
25. वही, पृ0 470

◆◆◆